

॥ श्रीमद्भगवद्गीता — जीवन सार ॥

दैनिक जीवन में कर्मयोग एवं आत्म-कल्याण का दिव्य उपदेश

निष्काम कर्मयोग (अध्याय २, श्लोक ४७)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

भावार्थ: तुम्हारा अधिकार केवल अपने कर्तव्य कर्म करने पर है, कर्म के फलों पर कभी नहीं। इसलिए फल की आसक्ति से मुक्त होकर कर्म करो और कर्म न करने का भी मोह मत पालो।

धर्म संस्थापना एवं ईश्वरीय वचन (अध्याय ४, श्लोक ७-८)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

भावार्थ: जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब सज्जन पुरुषों के उद्धार, दुष्टों के संहार और सत्य व धर्म की स्थापना हेतु मैं स्वयं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।

गीता के ५ अनमोल जीवन संदेश

१. **चिंता मुक्त जीवन:** जो बीत गया उस पर पश्चाताप मत करो, जो होगा उसकी व्यर्थ चिंता मत करो। वर्तमान ही तुम्हारा सत्य है।

२. **परिवर्तन ही सृष्टि का नियम है:** जिसे तुम नाश या मृत्यु समझते हो, वह वास्तव में नवजीवन और रूपांतरण है।

३. **मन पर विजय:** जिसने अपने मन को जीत लिया, उसका मन श्रेष्ठ मित्र बन जाता है; और जिसका मन अनियंत्रित है, वह उसका सबसे बड़ा शत्रु है।

४. **ईश्वर में समर्पण:** सभी कर्मों को निष्काम भाव से प्रभु को अर्पित कर जो कार्य करता है, वह पाप और संताप से मुक्त रहता है।